Internal Assignment-I/ आन्तरिक मूल्यांकन–**I**

M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)

Course Code : MASA-01 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–01

Max. Marks 20

पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. वैदिक साहित्य का परिचय देते हुए वैदिक साहित्य के महत्त्व का उल्लेख कीजिए तथा वेदों के काल के निर्धारण से सम्बन्धित प्रचलित मतों का वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रमुख ऋग्वैदिक देवताओं के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

2 ''भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है।'' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में भाषा की प्रकृति एवं विशेषताओं के बारे में बताइये।

अथवा

ध्वनि परिवर्तन क्या है? उसके कारणों पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) मंत्रों के आधार पर इन्द्रदेव की शक्तियों का वर्णन कीजिए।

(2) 'उपनिषद्' शब्द की व्याख्या करते हुए प्रमुख उपनिषदों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(3) संस्कृत और अवेस्ता की किन्हीं चार समानताओं और चार विषमताओं का उल्लेख कीजिए।

(4) निम्नलिखित मंत्र की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं,

यः पार्थिवानि विममे रजांसि,

यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं,

विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ।। 3.2.1 ।।

Internal Assignment-II/ आन्तरिक मूल्यांकन–**II**
M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)
Course Code : MASA-01 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–01

Max. Marks 20
पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. ऋग्वेद के दार्शनिक चिन्तन को समझाइये।

अथवा

वेदांग कितने हैं? उनके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

2 अर्थ के स्वरूप एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए अर्थ परिवर्तन के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ध्वनि नियम किसे कहते हैं? ध्वनि नियम और ध्वनि प्रवृत्ति में अन्तर स्पष्ट करते हुए ध्वनियों के विकास के कारणों पर निबन्ध लिखिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) मंत्रों के आधार पर रूद्रदेव के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

(2) शब्द धातुज हैं इस मत की समीक्षा कीजिए।

(3) प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

(4) निम्नलिखित मंत्र की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –

यं क्रन्दसी संयति विह्वयेते,
परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा,
नाना हवेते स जनास इन्द्रः।।

Internal Assignment-II/ आन्तरिक मूल्यांकन–**II**
M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)
Course Code : MASA-02 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–02

Max. Marks 20
पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. नाट्य ग्रंथों के आधार पर रूपकों के प्रकार लिखिए तथा संस्कृत रूपकों की विशेषता बताइये।

अथवा

संस्कृत के प्रमुख नाटककारों का संक्षिप्त परिचय देते हुए विशाखदत्त के मुद्राराक्षस की भाषा शैली तथा नाटकीय विशेषताओं की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

2 महाकवि कालिदास का कालनिर्धारण करते हुए कालिदास की रचनाओं का संक्षेप में परिचय दीजिए।

अथवा

मृच्छकटिकम् के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण कीजिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) ''कालिदास की सूक्तियाँ मानव के अन्तर्मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं'' कथन की समीक्षा कीजिए।

(2) 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघु पूर्णता गौरवाय' सूक्ति की संसदर्भ व्याख्या करते हुए इसके भाव पक्ष को भी स्पष्ट कीजिए।

(3) 'मेघदूतम्' के निम्न श्लोक की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –

तन्वीश्यामा शिखरिदशना पक्वनिम्बाधरोष्ठि,
मध्येक्षामा चकित हरिणा प्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणी भारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां,
या तत्र स्याद्युवति विषये सृष्टिराद्येव धातुः।।

(4) 'मृच्छकटिकम्' के नायक चारूदत्त की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Internal Assignment-I/ आन्तरिक मूल्यांकन–1
M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)
Course Code : MASA-02 पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–02

Max. Marks 20
पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. महाकवि कालिदास के नाटकों का संक्षिप्त परिचय देते हुए 'उपमा कालिदासस्य' इस उक्ति की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

अथवा

महाकवि कालिदास की भाषा शैली पर एक निबन्ध लिखिए।

2 गीतिकाव्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालते हुए संस्कृत के प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय दीजिए तथा संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ गीतिकाव्य के काव्यात्मक दृष्टि से महत्त्व का उल्लेख कीजिए।

अथवा

चाणक्य और राक्षस का तुलनात्मक दृष्टि से चरित्र–चित्रण कीजिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) राक्षस एक श्रेष्ठ मित्र, एक श्रेष्ठ शत्रु तथा नन्दवंश का परम हितैषी तर्कों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

(2) चारूदत्त की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(3) मृच्छकटिकम् की निम्नलिखित सूक्तियों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –
- छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति।
- सर्वत्रार्जवं शोभते।
- साहसे श्रीः प्रतिवसति।

(4) निम्नलिखित श्लोकों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –

प्रारभ्यते न खलु विध्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विध्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विध्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति (2/17मु.सा.)

यत्रोन्मत्ताभ्रमरमुखराः पादपाः नित्यपुष्पाः।
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।।
केकोत्कण्ठा भवनशिखनो नित्यभास्वत्कलापाः।
नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः।। (3/95/में.दू.)

Internal Assignment-I/ आन्तरिक मूल्यांकन–**I**

M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)

Course Code : MASA-03 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–03

Max. Marks 20

पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. कार्य–कारण वाद के सम्बन्ध में चार प्रमुख सिद्धान्त कौन–कौन से हैं समझाइये।

अथवा

वेदान्त शब्द की व्याख्या करते हुए शंकर के जीवन तथा रचनाओं पर एक लेख लिखिए तथा वेदान्त दर्शन में उनके महत्त्व को प्रतिपादित कीजिए।

2 सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।

अथवा

प्रामाण्यवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके भेदों उपभेदों को समझाइये।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) 'त्रिविध मल' कौन से हैं? समझाइये।

(2) सांख्य के अनुसार त्रिविध दुःखों का विवेचन कीजिए।

(3) अध्यारोप के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(4) 'कोशत्रय' क्या हैं? समझाइये।

Internal Assignment-II/ आन्तरिक मूल्यांकन–**II**
M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)
Course Code : MASA-03 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–03

Max. Marks 20
पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि का प्रयोजन व विकास क्रम बतलाइये।

अथवा

सांख्यदर्शन में पुरूष के स्वरूप की सिद्धि के लिए दिये गये तर्कों की विवेचना कीजिए।

2 वेदान्त दर्शन के अनुसार अनुबन्ध चतुष्ट्य की परिभाषा करते हुए अधिकारी के लक्षण एवं विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रत्यक्ष प्रमाण से क्या तात्पर्य है? उसके भेदों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) सांख्य दर्शन में ‘बन्धन’ से क्या तात्पर्य है? टिप्पणी लिखिए।

(2) वेदान्त के कार्य–करण सिद्धान्त पर टिप्पणी लिखिए।

(3) चार्वाक दर्शन की विचार–धारा का प्रतिपादन कीजिए।

(4) अनुमान से क्या तात्पर्य है? उसके भेदों का निरूपण कीजिए।

Internal Assignment-I/ आन्तरिक मूल्यांकन–**I**
M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)
Course Code : MASA-04 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–04

Max. Marks 20
पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. काव्य–शास्त्रीय जगत् को साहित्य–दर्पण की देन विषय पर निबन्ध लिखिए।

अथवा

पूर्ववर्ती आचार्यों विशेष रूप से मम्मट के काव्य–लक्षण का खण्डन करते हुए विश्वनाथ द्वारा निरूपित काव्य लक्षण का समीक्षात्मक परीक्षण कीजिए।

2 लक्षणा शब्द शक्ति का लक्षण स्पष्ट करते हुए उपादान लक्षणा तथा लक्षण–लक्षणा के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रस की परिभाषा देते हुए रस के विभिन्न मतों का प्रतिपादन कीजिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) भामह के काव्य लक्षण की समीक्षा कीजिए।

(2) परस्मैपद एवं आत्मनेपद में क्या अन्तर है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(3) वाच्य कितने प्रकार के होते हैं? कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(4) गद्य काव्य के भेदों का वर्णन करते हुए कथा एवं आरख्यायिका का लक्षण भामह के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

Internal Assignment-II/ आन्तरिक मूल्यांकन–**II**
M.A. Sanskrit (Previous) / एम.ए. संस्कृत (पूर्वार्द्ध)
Course Code : MASA-04 /पाठ्यक्रम कोड – एम.ए.एस.ए.–04

Max. Marks 20
पूर्णांक 20

टिप्पणी – प्रश्न संख्या 1 एवं 2 विवेचना परक हैं, जिनकी शब्द सीमा लगभग 500 शब्द है। ये दोनों प्रश्न 7–7 अंक के हैं। प्रश्न 3 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। जिनकी शब्द–सीमा 150 शब्द है तथा प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

टिप्पणी – निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. अन्तः एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर विश्वनाथ कविराज का समय निर्धारण करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेख लिखिए।

अथवा

नाट्योप्रत्ति विषयक विविध मतों पर समालोचनात्मक निबन्ध लिखिए।

2 अलंकार का लक्षण स्पष्ट करते हुए अलंकार सम्प्रदाय के प्रमुख चिन्तक एवं उनके ग्रंथों का परिचय दीजिए।

अथवा

नाम–धातु से क्या तात्पर्य है? नाम धातु प्रयोग के प्रमुख सूत्रों की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

3 150 शब्दों की सीमा में किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है।

(1) नाट्यवृत्ति का लक्षण देते हुए वृत्तियों के भेद एवं स्वरूप का वर्णन कीजिए।

(2) नाट्य मण्डप के प्रकारों का उल्लेख करते हुए उन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(3) प्रमुख रस एवं उनके स्थायी भावों का वर्णन कीजिए।

(4) 'रीति' की परिभाषा लिखते हुए उनके भेद एवं गुणों पर टिप्पणी लिखिए।